आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 जुलाई, 2020
डाक प्रेषण तिथि 10 जुलाई, 2020

वर्ष : 78 अंक : 07
श्रावण, 2077 मूल्य : ₹ 10
पृष्ठ संख्या 104

डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2018-20
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2018-20
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

जुलाई, 2020

आचार्य
हस्ती
दीक्षा-शतीवर्ष

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

Website : www.jinwani.in

कोरोना वायरस शारीरिक दूरी की प्रेरणा करता है,
पारस्परिक द्वेष एवं घृणा की नहीं।

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :

Rajeev Nita Daga Foundation Houston

जिनवाणी की प्रकाशन योजना में आपका स्वागत है

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा विगत 77 वर्षों से प्रकाशित 'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका मानव के व्यक्तित्व को निखारने एवं ज्ञानवर्धक सामग्री परोसने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है। इसमें अध्यात्म, जीवन-व्यवहार, इतिहास, संस्कृति, जीवन मूल्य, तत्त्व-चर्चा आदि विविध विषयों पर पाठ्य सामग्री उपलब्ध रहती है। अनेक स्तम्भ निरन्तर प्रकाशित हो रहे हैं, जिनमें सम्पादकीय, विचार-वारिधि, प्रवचन, शोधालेख, अंग्रेजीलेख, युवा-स्तम्भ, नारी-स्तम्भ आदि के साथ विभिन्न गीत, कविताएँ, विचार, प्रेरक प्रसङ्ग आदि प्रकाशित होते हैं। नूतन प्रकाशित साहित्य की समीक्षा भी की जाती है।

जैनधर्म, संघ, समाज, संगोष्ठी आदि के प्रासङ्गिक महत्त्वपूर्ण समाचार भी इसकी उपयोगिता बढ़ाते हैं। जनवरी, 2017 से 8 पृष्ठों की 'बाल जिनवाणी' ने इस पत्रिका का दायरा बढ़ाया है। अनेक पाठकों को प्रतिमाह इस पत्रिका की प्रतीक्षा रहती है तथा वे इसे चाव से पढ़ते हैं। जैन पत्रिकाओं में जिनवाणी पत्रिका की विशेष प्रतिष्ठा है। इस पत्रिका का आकार बढ़ने तथा कागज, मुद्रण आदि की महँगाई बढ़ने से समस्या का सामना करना पड़ रहा है। जिनवाणी पत्रिका की आर्थिक स्थिति को सम्बल प्रदान करने के लिए पाली में 28 सितम्बर, 2019 को आयोजित कार्यकारिणी बैठक में निम्नाङ्कित निर्णय लिये गए, जिन्हें अप्रेल 2020 से लागू किया गया है-

वर्तमान में श्वेत-श्याम विज्ञापनों से जिनवाणी पत्रिका को विशेष आय नहीं होती है। वर्ष भर में उसके प्रकाशन में आय अधिक राशि व्यय हो जाती है। अतः इन विज्ञापनों को बन्दकर पाठ्य सामग्री प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया।

आर्थिक-व्यवस्था हेतु एक-एक लाख की राशि के प्रतिमाह दो महानुभावों के सहयोग का निर्णय लिया गया। ऐसे महानुभावों का एक-एक पृष्ठ में उनके द्वारा प्रेषित परिचय/सामग्री प्रकाशित करने के साथ वर्षभर उनके नामों का उल्लेख करने का प्रावधान भी रखा गया।

जिनवाणी पत्रिका के प्रति अनुराग रखने वाले एवं हितैषी महानुभावों से निवेदन है कि उपर्युक्त योजना से जुड़कर श्रुतसेवा का लाभ प्राप्त कर पुण्य के उपार्जक बनें। जो उदारमना श्रावक जुड़ना चाहते हैं वे शीघ्र मण्डल कार्यालय या पदाधिकारियों से शीघ्र सम्पर्क करें।

अर्थसहयोगकर्ता जिनवाणी (JINWANI) के नाम से चैक प्रेषित कर सकते हैं अथवा जिनवाणी के निम्नाङ्कित बैंक खाते में राशि नेफ्ट/नेट बैंकिंग/चैक के माध्यम से सीधे जमा करा सकते हैं।

बैंक खाता नाम-JINWANI, बैंक-State Bank of India, बैंक खाता संख्या-51026632986, आई.एफ.एस. कोड-SBIN0031843, ब्रॉच-Bapu Bazar, Jaipur

राशि जमा करने के पश्चात् राशि की स्लिप मण्डल कार्यालय या पदाधिकारियों की जानकारी में लाने की कृपा करें जिससे आपकी सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके।

'जिनवाणी' के खाते में जमा करायी गई राशि पर आपको आयकर विभाग की धारा 80G के अन्तर्गत छूट प्राप्त होगी, जिसका उल्लेख रसीद पर किया हुआ है। 'जिनवाणी' पत्रिका में जन्मदिवस, शुभविवाह, नव प्रतिष्ठान, नव गृहप्रवेश एवं स्वजनों की पुण्य-स्मृति के अवसर पर सहयोग राशि प्रदान करने वाले सभी महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। आप जिनवाणी पत्रिका को सहयोग प्रदान करके अपनी खुशियाँ बढ़ाना न भूलें।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 9314625596

जिनवाणी प्रकाशन योजना के लाभार्थी

'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका की अर्थ–व्यवस्था को सम्बल प्रदान करने हेतु निम्नाङ्कित धर्मनिष्ठ उदारमना श्रावकरत्नों से राशि रुपये 1,00,000/– प्राप्त हुई है। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं जिनवाणी परिवार उनका हार्दिक आभारी है।

(1) श्री चंचलमलजी बच्छावत, कोलकाता, अध्यक्ष–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

(2) श्रीमती मंजूजी भण्डारी, बेंगलोर, अध्यक्ष–अ. भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल

(3) श्री पी. शिखरमलजी सुराणा, चेन्नई, पूर्व संघाध्यक्ष एवं पूर्व मण्डल अध्यक्ष

(4) श्री विनयचन्दजी डागा, जयपुर, कार्याध्यक्ष–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

(5) डॉ. धर्मचन्दजी जैन, जयपुर, कार्याध्यक्ष–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

(6) श्री अशोक कुमारजी सेठ, जयपुर, मन्त्री–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

(7) श्री राजेन्द्र कुमारजी रितुलजी पटवा, जयपुर, कोषाध्यक्ष–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

(8) श्री दुलीचन्दजी–श्रीमती कमलाजी बाघमार, चेन्नई

(9) श्री अशोक कुमारजी चोरड़िया, जोधपुर

(10) श्री प्रमोदजी महनोत, जयपुर, अध्यक्ष–श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर

(11) श्री हिमांशुजी सुपुत्र श्री सोहनलालजी जैन, अलीगढ़–रामपुरा, जिला–टोंक

(12) श्री गौत्तमचन्दजी जैन, पूर्व जिला रसद अधिकारी (अलीगढ़–रामपुरा वाले), जयपुर

निम्नाङ्कित धर्मनिष्ठ उदारमना श्रावकरत्नों से जिनवाणी प्रकाशन योजना हेतु स्वीकृति प्राप्त हो गयी है–

1. श्री कैलाशचन्दजी हीरावत, पूर्व संघाध्यक्ष, जयपुर
2. श्री आनन्दजी चौपड़ा, कार्याध्यक्ष–अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर
3. श्री क्रान्तिचन्दजी मेहता, अलवर, मण्डल कार्यकारिणी सदस्य
4. श्रीमती अलकाजी दुधेड़िया, अजमेर, महासचिव–अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल
5. श्री अतिशजी सेठिया, होलनांथा

जिन महानुभावों ने अर्थसहयोग हेतु स्वीकृति प्रदान की है, उनके प्रति भी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल कृतज्ञता ज्ञापित करता है तथा स्वेच्छा से इस योजना से जुड़ने वाले महानुभावों की स्वीकृति के लिए प्रतीक्षारत है।

कोरोना संकट काल में हम सबको जैन जीवनशैली का महत्त्व समझ में आ रहा है, अत: जिनवाणी पत्रिका का आगामी विशेषाङ्क 'जैन जीवनशैली' पर केन्द्रित रहेगा।

–अशोक कुमार सेठ, मन्त्री–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 9314625596

अंक सौजन्य

श्रावकरत्न वीर पिता एवं वीर नाना
श्री उमरावमलजी सेठ
एवं वीर माता श्राविकारत्न
श्रीमती सज्जनदेवीजी सेठ

श्रावकरत्न वीर पिता एवं वीर नाना श्री उमरावमलजी सेठ एवं वीर माता श्राविकारत्न श्रीमती सज्जनदेवीजी सेठ का रत्नसंघीय श्रावक-श्राविकाओं में अग्रणी स्थान रहा। सेठ परिवार पीढ़ियों से गुरुभक्त एवं श्रद्धा समर्पित रहा है। सेठ श्री उमरावमलजी प्रतिमाह की पूर्णिमा को परम आराध्य गुरु भगवन्त आचार्य श्री 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. की सेवा में दर्शन-वन्दनार्थ उपस्थित होते थे। सन् 1948-86 तक नियमित 38 वर्षों तक परिवार की विषम परिस्थितियों में भी गुरु दर्शन-वन्दन हेतु पधारकर आपने अपनी दृढ़ संकल्प शक्ति का परिचय दिया।

उत्कृष्ट साधर्मि-वात्सल्य एवं आत्मीयता के कारण अनेक गुरु भक्त जयपुर पधारने पर सहज ही सेठ परिवार को आतिथ्य सत्कार का लाभ देकर प्रसन्नता का अनुभव करते थे। पण्डित दु:खमोचनजी झा, उनके सुपुत्र पण्डित शशिकान्तजी झा एवं आचार्यश्री की सेवा में चार माह विराजने वाले सभी का लाभ सेठ परिवार सहर्ष लिया करता था। 16 जनवरी, 1964 को अपनी तृतीय पुत्री तेजकँवर (वर्तमान में साध्वीप्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा.) की दीक्षा पूर्ण ठाट-बाट से करवाई, जिसमें जयपुर की तत्कालीन महारानी गायत्रीदेवीजी की मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थिति महत्त्वपूर्ण थी। वीरमाता श्रीमती सज्जनदेवीजी की सत्कार भावना पुराने श्रावक-श्राविकाएँ सदैव स्मरण रखते हैं। पूज्य आचार्य भगवन्त ने स्वयं फरमाया था कि सज्जनबाई सा. का क्या स्वधर्मी वात्सल्य था! अपने दौहित्र श्री प्रमोदजी मेहता (वर्तमान में तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.) की दीक्षा के सभी कार्यक्रम एवं अभिनिष्क्रमण यात्रा भी सेठ परिवार की हवेली से ही सम्पन्न हुए।

रत्नसंघ के अतिरिक्त भी जयपुर में अन्य सन्तों के चातुर्मास काल में पधारे दर्शनार्थियों का सेठ उमरावमलजी एवं सज्जनबाईजी अतिथि सत्कार का भरपूर लाभ लेते, सभी दर्शनार्थीबन्धु सेठ परिवार का आतिथ्य स्वीकार कर प्रसन्नता की अनुभूति करते थे। रत्नसंघ के सभी कार्यक्रमों को गति देने में सेठ साहब उमरावमलजी का अतुलनीय योगदान रहता था। पूज्य सेठ सा. का सम्पूर्ण परिवार सम्प्रति पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के प्रति पूर्ण श्रद्धा समर्पित है।

सुपुत्रियाँ-(1) स्व. श्रीमती प्रेमकुमारी जी (माताश्री तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.)। (2) स्व. श्रीमती विजया कुमारीजी (नागौर-गोटन निवासी) आप तपस्वी रत्ना एवं स्वाध्यायी श्राविका थी। अनेक थोकड़ों की ज्ञाता थी। (3) तेजकँवरजी (साध्वीप्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा.)। (4) श्रीमती कमल कुमारीजी चोरड़िया धर्मसहायिका श्री प्रकाशचन्दजी चोरड़िया (जो सेवामूर्ति व्याख्यात्री महासती श्री रतनकँवरजी म.सा. के सांसारिक भ्राता हैं) आप स्वाध्याय रसिक श्राविका रत्न हैं एवं सतत स्वाध्याय में रमण करती हैं।

सुपुत्र-(1) श्री विनोद कुमारजी सेठ-आप भी स्वाध्याय, सेवा, कविता एवं साहित्य के विशेष रसिक हैं। अनेक पद्य रचनाएँ कण्ठस्थ हैं। **(2) श्री अशोक कुमारजी सेठ-**आप वर्तमान में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मन्त्री पद को गौरवान्वित कर रहे हैं। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के विभिन्न पदों पर एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अनेक पदों का बखूबी निर्वहन कर चुके हैं। संगठन एवं सेवा कार्यों में विशेष रुचि रखते हैं। दोनों सुपुत्रवधुएँ, पौत्र, पौत्र वधुएँ सभी दौहित्र, उनके पुत्र आदि सभी परिवारजन नियमित सामायिक-स्वाध्याय, सेवा, तपस्या, साधना में संलग्न रहते हुए संघ के प्रति पूर्णत: समर्पित हैं एवं रत्नसंघ में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। आपके दौहित्र के सुपुत्र श्री मनीषजी मेहता अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष पद का बखूबी निर्वहन कर रहे है एवं सुपौत्र श्री महावीरजी सेठ भी बैंकॉक में संघ के कार्यक्रमों को मूर्त रूप देते रहते हैं।

अंक–सौजन्य

तपस्विनी सुज्ञा श्राविकारत्न

श्रीमती पारसकँवरजी भण्डारी को शत-शत नमन

मृत्यु को महोसत्व बनाने वाली श्रीमती पारसकँवरजी भण्डारी, 2 अप्रेल, 1933 में बोरून्दिया कुल में माता बदनकँवर की कुक्षि से जन्मी एवं पिता फूलचन्दजी के दुलार–प्यार में बड़ी हुई। बचपन में सत्संस्कारों के बीजारोपण से जीवन महका, पल्लवित हुआ। समय की गति के साथ श्रेष्ठिवर्य श्री माँगीचन्दजी भण्डारी के सुपुत्र श्री इन्दरचन्दजी भण्डारी के साथ परिणय सूत्र में आबद्ध हुई, नवगृहस्थ जीवन का आरम्भ हुआ। गृहस्थ बगिया के सुरभित पुष्प दो सुपुत्र श्री प्रसन्नचन्दजी, श्री अशोकचन्दजी भण्डारी तथा चार सुपुत्रियाँ श्रीमती ताराजी बैद, श्रीमती मंजुजी कुम्भट, श्रीमतीकंचनजी छल्लाणी एवं श्रीमती रेणुजी चोरड़िया सभी संस्कार युक्त परिवार में हैं तथा पीहर–ससुराल को दिपा रही हैं।

तपाराधना–आपने कई उपवास, आयम्बिल, बेले, तेले, कई अठाइयाँ, सोलह, इक्कीस एवं मासखमण–दो बार, करीब दस–बारह साल तक निरन्तर एकाशन आदि किये।

धार्मिक अध्ययन–आप नित्य 5–7 सामायिक एवं प्रतिक्रमण करती थी। अनेक थोकड़े कण्ठस्थ थे, अनेक आगमों की जानकार थीं। प्रश्नव्याकरणसूत्र की खुली पुस्तक प्रतियोगिता की प्रश्नोत्तरी आपने तैयार करके संघ को भेंट की। नित्य नया सीखने की आपकी प्रगाढ़ रुचि और अटूट श्रद्धा थी। जिनवाणी में भी आपकी रचनाएँ प्रकाशित हुई।

संघ, समाज एवं श्राविका मण्डल में आपका योगदान

❀ सर्वप्रथम 1991 में आपकी अध्यक्षता में महिला–सम्मेलन चेन्नई में ❀ महावीर महिला मण्डल चेन्नई की अध्यक्ष ❀ युवतियों को धर्म में दृढ़ करने की भावना से युवति मण्डल चेन्नई की स्थापना ❀ चेन्नई स्थानक में सप्ताह में दो बार महिलाओं को पढ़ाना ❀ अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की चेन्नई शाखा की स्थापना 1998 में तथा छह वर्षों तक संस्थापक अध्यक्षा ❀ अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की उपाध्यक्षा ❀ ज्ञानवर्धन के लिए हर संघ की प्रश्नोत्तरी में रुचि।

श्रद्धा एवं समर्पण–गुरु हस्ती, गुरु हीरा, उपाध्यायप्रवर मानचन्द्रजी एवं समस्त सन्त–सतियों के प्रति अटूट श्रद्धा संघ के प्रति पूर्ण समर्पित। 'यथा नाम तथा गुण' श्राविकारत्न।

संथारापूर्वक प्रयाण–आपने **'गुरु हीरा'** से संथारे के बारे में व्यक्तिगत पूरी समझाइश पाकर, पूरे होश–हवास में संघ और परिवार की पूर्ण सहमति लेकर चेन्नई में चौविहार संथारा ग्रहण किया। पूर्ण सजगता के साथ नियमों का प्रतिपूर्ण दृढ़ता से पालन करते हुए 5 दिसम्बर, 2012 को मंगल वातावरण में आपने मृत्यु को 26 दिन के चौविहार संथारे के साथ ऐतिहासिक महोत्सव बना दिया। आपके बताये हुए मार्ग पर हम धर्म एवं संघ के कार्यों में आगे बढ़ते रहें, इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ, आपका कोटि–कोटि अभिनन्दन।

श्री प्रसन्नचन्द-श्रीमती मंजु भण्डारी, बेंगलोर

राष्ट्रीय अध्यक्ष–अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल

JVS PURITY

JVS Foods Pvt. Ltd.

Manufacturer of :

NUTRITION FOODS

BREAKFAST CEREALS

FORTIFIED RICE KERNELS

WHOLE & BLENDED SPICES

VITAMIN AND MINERAL PREMIXES

Special Foods for undernourished Children
Supplementary Nutrition Food for Mass Feeding Programmes

With Best Wishes :

JVS Foods Pvt. Ltd.

CERTIFIED ISO 22000 CERTIFIED

G-220, Sitapura Ind. Area,
Tonk Road, Jaipur-302022 (Raj.)
Tel.: 0141-2770294
Email-jvsfoods@yahoo.com
Website-www.jvsfoods.com
FSSAI LIC. No. 10012013000138

Food Safety System Certification 22000

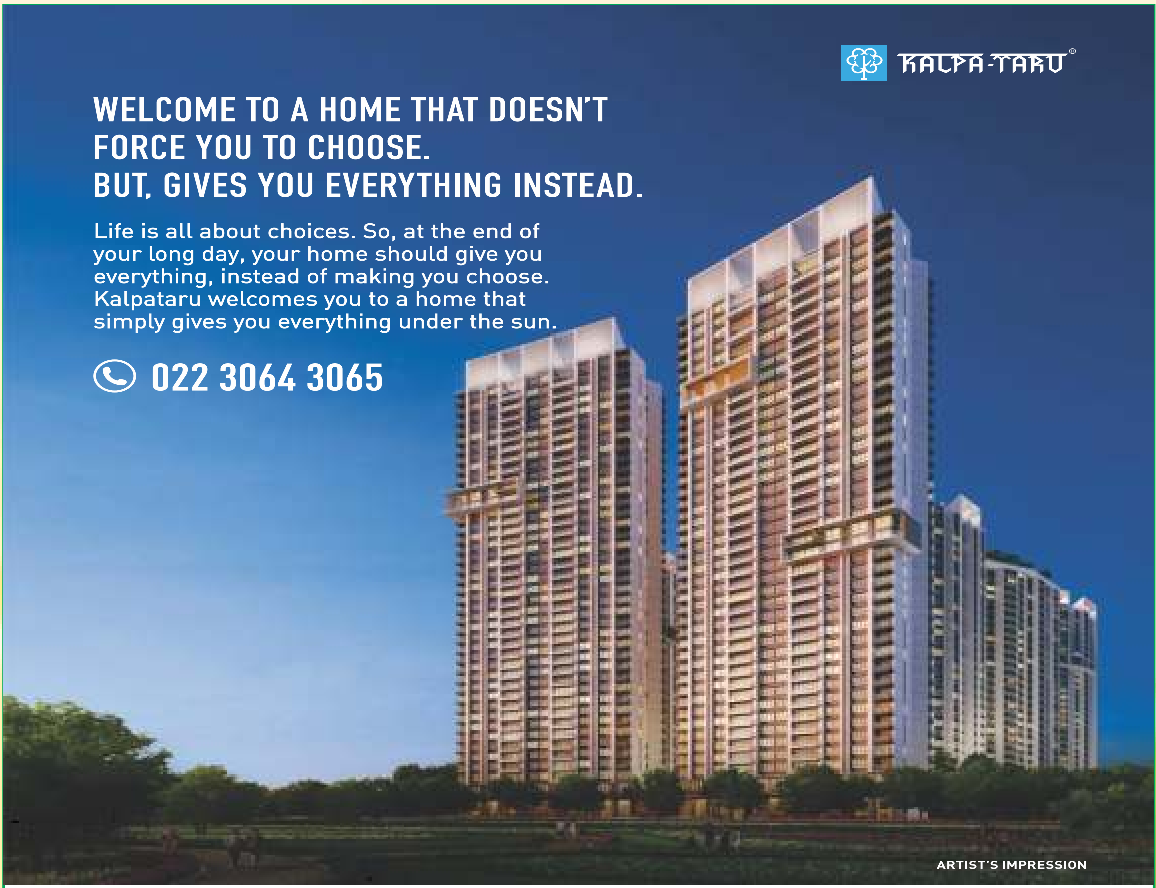

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT
IMMENSA
THANE (W)
EVERYTHING UNDER THE SUN

TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065

Site Address: Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office**:101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | Tel: +91 22 3064 5000 | Fax: +91 22 3064 3131 | **Email**: sales@kalpataru.com | **Website**: www.kalpataru.com

In association with HDFC PROPERTY FUND

This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. *Conditions apply.

If undelivered, Please return to

Samyaggyan Pracharak Mandal
Above Shop No. 182,
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)
Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - अशोक कुमार सेठ द्वारा डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन